शुंग एवं सातवाहन कालीन स्थापत्य कला

शुंग एवं सातवाहन कालीन स्थापत्य कला

शुंग काल की शुरुआत पुष्यमित्र शुंग के शासन काल से मानी जाती है। कला के क्षेत्र में इस काल में अनेक केन्द्रों में स्थापत्य एवं शिल्प का व्यापक प्रचार हुआ।प्रमुख रूप से यह काल स्तूपों के निर्माण के लिए जाना जाता है।इस काल में उत्तर भारत में तीन बड़े स्तूपों का निर्माण हुआ।उदाहरण के तौर पर **भरहूत (सतना मध्य प्रदेश),साँची (रायसेन मध्य प्रदेश) एवं बोध गया** है।इन स्तूपों का आधारिक स्तर पर निर्माण अशोक के काल में हुआ था।शुंग शासन के दौरान इन स्तूपों का सौंदर्यीकरण किया गया।साँची के एक अभिलेख से स्पष्टहोता है। बढई एवं दस्तकारो को पत्थर के ऊपर नक्काशी के काम के लिए बड़ी संख्या में लगाया गया।

साँची का स्तूप

अभिलेखों में साँची के महास्तूप का नाम **'महा चैत्य गिरी'** है। यहाँ से तीन स्तूपों की प्राप्ति हुई है। साँची के स्तूपों में **"सारिपुत्र"** एवं **"मोग्द्गालयन"** के अस्थि अवशेष रखे गये हैं। इस स्तूप को बलुआ पत्थर से सजाया गया। स्तूपों के चारो ओर तोरण को बौद्ध धर्म की कथाओं विशेषकर **जातक कथा** के दृश्यों से अलंकृत किया गया है। मूर्तिकला की दृष्टिकोण से भी यह स्तूप उत्तर भारत के मंदिरों में भी सर्वश्रेष्ठ उदहारण है। यहाँ बनी सालभंजिका कि मूर्ति भारतीय कला में विशिष्ट स्थान रखते हैं।

भरहूत का स्तूप

यह लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है।यहाँ कि कला विशुद्ध रूप से ग्रामीण कला है। यहाँ तोरण के साथ साथ वेदिकाओं को भी अलंकृत किया गया है। भरहूत में बौद्ध कथाओं के अतिरिक्त **यक्ष यक्षिणी** की मूर्तिया बन गयी है। यक्षिणी कि मूर्ति में **चंदा यक्षिणी** की सबसे प्रसिद्ध एवं प्रभावशाली है। इसके अतिरिक्त भरहूत में **चूला कोका** देवता एवं सिरीमा देवता का भी अंकन किया गया है।भरहूत के स्तूप के अवशेष कलकत्ता के इंडियन म्युजियम में संरक्षित एवं संग्रहित किया गया है।

बोध गया का स्तूप

स्तूप को बोध गया के महाबोधि मंदिर परिसर से शुंग कालीन वेदिकाओं के अवशेष प्राप्त हुए हैं। ये

वेदिकाएं पुष्प से अलंकृत एवं सुज्जजित है। वेदिकाओं पर बने पुष्प के मध्य मानव आकृति का निरमाण किया गया है।